शोध मंथन Vol. XIV No.III June-Sep. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भारत की पारम्परिक सांस्कृतिक व्यवस्था और उसका वर्तमान विश्व पर प्रभाव

प्राप्तिः 04.08.2023
स्वीकृतः 15.09.2023

प्रो० सुमन शर्मा
इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजूकेशन
कादराबाद, मोदीनगर (गाजियाबाद)
ईमेलः *sumansharmaite@gmail.com*

54

सारांश

भारत में संस्कारों को ही संस्कृति का स्त्रोत मानते हैं जिससे व्यक्ति सुसंस्कृत हो जाता ह। सम्पूर्ण सृष्टि को दो भागों में बांटा जा सकता है एक जड़ और दूसरा जंगम। जंगम रचना में मानव श्रेष्ठ है। यजुर्वेद में मानव को ''अमृतस्यपुत्र'' का है। हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति आदिकाल से व्यापक थी। भारतीय संदर्भ में संस्कृति के अन्तर्गत सभी विचार नहीं आते केवल कल्याणकारी व लोकहितकारी विचार व्यवहार व मूल्य की सीमा में आते हैं। भारतीय संस्कृति का प्रधानतत्व आध्यात्मिकता है। यह संस्कृति कर्म प्रधान जी है। भारत की संस्कृति ने सम्पूर्ण राष्ट्र को प्रभावित किया था। सांस्कृतिक धरोहर मानव की श्रेष्ठतम धरोहर है।

प्रस्तावना

नैतिक एवं जीवन के लक्ष्यों का धर्म, संस्कृति एवं मूल्यों से निकट का सम्बन्ध है। संस्कृति के अनुसार ही किसी समाज की जीवन शैली का निर्माण होता है। संस्कृति में आदर्शो, मूल्यों, विश्वासों एवं मान्यताओं व मानकों का योग होता है। संस्कृति के मुख्य अंग–परम्परायें, चिन्तन शैली, कला, शिल्प, वस्तु, मूल्य तथा आचरण होते है। संस्कृति सामाजिक परम्पराओं का एक प्रारूप होता है। संस्कृति सभ्यता की सहेली है। संस्कृति उस फूल के समान हैं जो मानव की क्रियाओं द्वारा उसके प्रारूप को निर्धारित करता है। संस्कृति के अतिसुन्दर पल का विकास करना शिक्षा का कार्य है। भारत में संस्कारों को ही संस्कृति का स्त्रोत मानते हैं, जिससे व्यक्ति सुसंस्कृत हो जाता है। संस्कारों में पवित्रता तथा शुद्धता आती है जिससे वह करने योग्य कर्म करता है, खाने योग्य वस्तु का ही सेवन करता है। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत संस्कारों की बहुत बड़ी गरिमा है। गर्भाधान से लेकर मानव के पुनर्जन्म तक विविध संस्कार किए जाते हैं जिससे मानव सुसंस्कृत बनता है। माता के विचारों तथा संस्कारों का प्रभाव गर्भस्थ बालक पर पड़ता है। सम्पूर्ण सृष्टि को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है– एक जड़ और दूसरा जंगम। जंगम रचना में मानव श्रेष्ठ है। इसका मुख्य कारण यह है कि निसर्ग ने मानव को ज्ञान शक्ति दी है, वह अन्य किसी प्राणी को नहीं। युजुर्वेद में मानव को ''अमष्तस्य पुत्रः'' कहा है। मानव ने अपनी ज्ञान शक्ति से इतने बड़े दीर्घकाल में जो कुछ उपार्जित किया है, वह सब संस्कृति के अन्तर्गत आता है।

''संस्कृति'' को मनीषियों ने अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया है। साहित्यकारों के लिए संस्कृति जीवन का प्रकाश और कोमलता है। कुछ विद्वानों ने सांस्कृतिक का अर्थ नैतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक उन्नति माना है। इतिहासकारों के लिए की कलात्मक अथवा बौद्विक विकास ही संस्कृति है। मानव शास्त्रियों के अनुसार संस्कृति सीखे हुए व्यवहार की वह समग्रता है जिसमें कि एक बालक का व्यक्तित्व पलता और पनपता है। कुछ विद्वानों ने कहा कि संस्कृति मानव की सामाजिक धरोहर है। कहने का तात्पर्य है कि यदि बालक को प्रारम्भ से ही मूल्यपरक शिक्षा प्रदान की जाए ताकि एक संस्कृत समाज का निर्माण किया जा सके। किसी भी समाज तथा राष्ट्र की संस्कृति का अग्रसरण व रक्षा मूल्यों के द्वारा सम्भव है। मूल्य व्यक्ति के मानवीय आचरण तथा व्यवहार का मापदण्ड होते हैं, इनका आधार मनुष्य के अनुभव, सामाजिक सांस्कृतियां एवं सामाजिक परम्पराएं होती हैं। भारतीय वैदिक संस्कृति सम्बन्धी मूल्य मनुष्य की दिनचर्या को नियंत्रित एवं व्यवस्थित करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

भारत की संस्कृति व सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। जीने की कला हो, विज्ञान हो, राजनीति का क्षेत्र भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है। अन्य देशों की संस्कृतियां तो समय की धारा के साथ–साथ नष्ट होती रही हैं किन्तु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर–अमर बनी हुई है जो संस्कृति अत्यधिक व्यापक, सार्थक और प्रभावशाली होती है वह अन्य संस्कृति को अपने में समा लेती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

सास्कृतिक पम्पराएं हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो अपने इतिहास, मूल्यों और विश्वासों से जुड़ने की अनुमति देती है। आज का मानव भारतीय संस्कृतिक की उपेक्षा कर विदेशी संस्कृति अपना रहा है। संयुक्त परिवार की जगह एकांकी परिवार को महत्व दे रहा है। जिस परिवार में दादा–दादी की छत्र छाया में बच्चे का लालन–पालन किया जाता था, पौराणिक कहानियां सुनाकर उनके उज्जवल भविष्य को संवारा जाता था आज यह सब समाप्त होता जा रहा है। मानव जीवन में अश्लीलता झलकती है। बड़ों का अनादर, छोटो का तिरस्कार, असम्य भाषा, दुराचरण, अपने रीति–रिवाजों की अवहेलना, अपनी परम्पराओं की उपेक्षा, पारचात्य साहित्य को महत्व देना, पारचात्य सांस्कृतिक परम्पराओं को अपनाना अनेक ऐसी घटनाएं है। जो समाज को दूषित करती हैं। विद्यालय से पहले बालकों को परिवार में संस्कृति की शिक्षा दी जाती है। परिवार में ही उसे उचित, अनुचित में अन्तर करना सीखता है। परिवार में ही उसे विभिन्न प्रकार के संस्कारों के द्वारा उसको सुसंस्कृत बनाया जाता है। परिवार में ही व्यक्ति नैतिक मूल्यों और धार्मिक व्यवहार के प्रतिमानों को सीखता है। परिवार ही उसे शिष्टाचार सिखाता है। लेकिन जब से परिवार में विघटन की प्रक्रिया चली है, ये संस्कार नगण्य हो गए हैं। बच्चों को इनका ज्ञान देने वाला कोई नहीं है। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर मैनें अपने अध्ययन का यह विषय चुना।

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा का ज्ञान कराना।
2. भारतीय प्राचीन संस्कृति की विशेषता का ज्ञान कराना।

3. मनुष्य जाति में समभाव व वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का विकास करना।
4. मानव को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे गुणों का ज्ञान प्राप्त करना।
5. मनुष्य जाति को बताना कि अपनी इन्द्रियों को वश में करके अध्यात्मिक जगत में लगाना।

भारतीय पारम्परिक सांस्कृतिक विरासत

संस्कृति किसी समाज की मानसिकता व जीवन शैली के प्रति दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। किसी भी राष्ट्र का सम्पूर्ण जीवन उसकी संस्कृति से आपूरित रहता है। भारतीय संदर्भ में संस्कृति के अन्तर्गत सभी विचार नहीं आते, केवल कल्याणकारी व लोकहितकारी विचार, व्यवहार व मूल्य संस्कृति की सीमा में आते हैं। आटावे के अनुसार– ''किसी समाज की संस्कृति से अर्थ उस समाज की सम्पूर्ण पद्धति से होता है।'' इसी प्रकार व्हाइट के अनुसार– ''संस्कृति एक प्रतीकात्मक, निरन्तर, संचयी और प्रगतिशील प्रक्रिया है।''

हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति आदिकाल से व्यापक थी। हमारी इस संस्कृति का इतिहास वैदिक से प्रारम्भ होता है जो एक स्वर्णिम युग था। वैदिक काल के पश्चात् पुरणकाल में प्राचीन संस्कृति का महत्व घटने लगा था। तत्पश्चात् विदेशी आक्रमणों के साथ दो संस्कृतियों के परिणामस्वरूप भी बहुत परिवर्तन आया। इसका कारण यह था कि जब कभी भी दो संस्कृतियां सम्पर्क में आती हैं तो एक दूसरे को प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः अवश्य प्रभावित करती हैं परन्तु जो संस्कृति अधिक प्रभावी होती है वह दुर्बल संस्कृति को अपने में समा लेती है भारतीय संस्कृति भी इसी प्रक्रिया का परिणाम है। मुस्लिम आक्रमणों के भारत में बस जाने पर भारतीय संस्कृति बहुत प्रभावित हुई। वैदिक धर्म एकश्वरवादी था, जिसे पौराणिक काल में विकृत करके बहुदेववादी में परिवर्तित करने का प्रयास किया गया। अंग्रेजों की नीति मुसलमानों की नीति के अनुसार कठोर नहीं थी। इन्होंने ईसाई मिशनरियों के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में पारचात्य संस्कृति का समावेश किया व पिछड़े वर्ग के लोगों को चिकित्सा वस्त्र आदि की सुविधाएं तक जीविका देकर ईसाई बनाया। भारतीयों का अपनी प्राचीन संस्कृति से विश्वास हटने लगा। परन्तु जब धर्म तथा समाज–सुधारकों हिन्दू धर्म की कटटरता और संकीर्णता को देखा तो उन्होंने हिन्दू धर्म को लचीला बनाने का प्रयास किया। नीच वर्ग के लोग धड़ाधड़ मुसलमान बन रहे थे क्योंकि वे हिन्दू समाज की कठोरता और बर्बर नीति से पिस चुके थे। शंकराचार्य रामानुज, वल्लभाचार्य, चैतन्य, कबीर, दादू, रैदास और नानक ने हिन्दू धर्म की रूढ़ियों और अंधविश्वास को तोड़ने का प्रयत्न किया। ब्रहम समाज, आर्य समाज तथा थ्योसोफिकल सभा ने एकेश्वर वाद, मूर्तिपूजा और अस्पृश्यता का विरोध किया। आर्य समाज ने मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों को हिन्दू बनाना प्रारम्भ किया। शंकराचार्य ने इस दिशा में अद्वितीय कार्य किया था।

भारतीय संस्कृति के शक्तिशाली स्वरूप का यही प्रमाण है कि इसने अपनी मौलिकता का आत्म–समर्पण किए बिना विपरीत संस्कारों को आत्मसात किया है और सदा प्रगति पथ पर अग्रसर रही है निश्चय ही इसकी अपार सहिष्णुता को आध्यामिकता का सम्बल मिला है जिसे सुदृढ़ शिक्षा व्यवस्था से सदैव पोषण मिला है। जितना महत्व राजा का होता है उतना ही महत्व आचार्य का भी होता है, इसलिए वेदारम्भ संस्कार में अर्थववेद का निम्न मंत्र समाविष्ट है

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणामिच्छते।।

अर्थात राष्ट्र की रक्षा हेतु राजा अथवा शासकों को आत्मविद् आचारवान एवं चरित्रवान होना चाहिए। इसी प्रकार ब्रहमाज्ञ आचार्य अथवा चरित्रवान शिक्षक ही छात्रों का चरित्र निर्माण कर सकते हैं।

भारतीय संस्कृति का प्रधान तत्व आध्यात्मिकता है। भारतीय संस्कृति जिस विचारधारा से निकली है उस विचारधारा का मूल अध्यात्म है। इसका सुन्दर निष्कर्ष भगवद्गीता के इस श्लोक में हुआ है–

यो मामृ पश्यति सर्वत्र सर्व च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।।

अर्थात भारतीय संस्कृति में शारीरिक सुख के स्थान पर आध्यात्मिक आनन्द को सर्वोपरि माना है। यहां आत्मा और ईश्वर के महत्व को स्वीकार किया गया है। यह संस्कृति विश्वबन्धुत्ववादी है। यह सारे विश्व को परिवार के समान ही मानती है। हमारे ऋषि मुनियों ने कहा था–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
आत्मवत् सर्वभूतेषू यः पश्यति स पण्डितः।।

हमारे सन्त महात्मा आज भी यही नारा लगाते है– 'विश्व' का कल्याण हो। हमारे यहां प्राचीन काल से ही विश्व शान्ति पर बल दिया जाता रहा है। यह संस्कृति कर्म प्रधान भी है। गीता में कहा गया है कि कर्म किये जाओ फल की इच्छा मत करो। फल तो कर्म से जुड़ा हुआ है, जैसा कर्म होगा, उसी के अनुरूप फल प्राप्त होगा–

कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

सत्य, अहिंसा जैसे मूल्य भारतीय संस्कृति के मूल आधार रहे है। आदिकाल से ही 'सत्यंवद्', ''धर्मचर'' जैसे उपदेश दिये जाते रहे है।

भारत की पारम्परिक सांस्कृतिक व्यवस्था और उसका वर्तमान विश्व पर प्रभाव :–

भारत की संस्कृति ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है क्योंकि इसकी दृष्टि अत्यन्त व्यापक है। सांस्कृतिक धरोहर मानव की श्रेष्ठतम धरोहर है, जिसकी सहायता से वह प्रगति और विकास की ओर अग्रसर होता है। संस्कृतिक धरोहर के अन्तर्गत मानव निर्मित वस्तुएं, परम्पराएं, आविष्कार, स्मारक, अभिलेख, सिक्के, धर्म, दर्शन, कलायें और साहित्य आदि अनेकों वस्तुएं और विचार आते हैं जो सम्पूर्ण मानव समाज की अमूल्य निधि है। संसार के चार पुराने संस्कृत देश माने जाते है– भारत, मिस्र, चीन और यूनान। परन्तु भारत को छोड़कर अन्य तीन देशों की प्रान्तीय संस्कृति के आज उन देशों के जीवन में दर्शन नहीं होते। मिस्र, चीन और यूनान की प्राचीन संस्कृति या तो वहां के खंडहरों में दिखती है या वहां के आजायबघरों में। भारत ही एक मात्र संसार का प्राचीनतम देश है जहां की प्राचीनतम संस्कृति की परम्परा आज भी आज के भारतीय जीवन में दृष्टिगोचर होती है।

भारतीय संस्कृति गंगा के समान एक अविरल प्रभावित धारा है जो अपने आदिकाल में ऋग्वेद से प्रारम्भ होकर समय की भूमि पर चक्कर लगाती हुई हम तक पहुंची है। जिस प्रकार गंगा

में उसके उद्‌गम–स्त्रोत से लेकर उसके समुद्र में प्रवेश होने तक अनेक नदियां और धाराएं मिलती है, उसका स्वरूप विस्तृत, पाट चौड़ा और थाह अगम हो जाती है तथा उन सभी नदियों का जल गंगा में मिलकर गंगा जल बन जाता है। ठीक उसी प्रकार हमारी संस्कृति रूपि गंगा में भी अनेक धाराएं मिली है। यहां यवन आए, शक और हूण आए अंग्रेज पुर्तगाली और फ्रांसीसी आये। चाहे पाश्चात्य विचारधारा हो अथवा चीनी, रूसी, अरबी विचारधारा हो, हमारी संस्कृति में समाहित होकर वे एक रूप हो गयी हैं– गंगा जल के समान। एक पुस्तक ''हमारी परम्परा'' डा0 आनन्द कुमार स्वामी ने लिखी है। उन्होंने लिखा है, ''भारत की संस्कृति इसलिए अजर–अमर है कि उसमें प्रत्येक भिन्नता को आत्मसात करने के अद्वितीय समता है। शत–सहस्त्र विभिन्नताऐं वहां एक अविनाशनी अभिन्नता में ढल कर भारतीय दिनचर्या का मूल आधार बन जाती है। श्री वियोगी हरि ने लिखा है, ''हजारों वर्षो के टेढे–मेढे विस्तार को लांघती आ रही भारतवासियों आस्था–अनास्थाएं, निषेध–स्वीकृतियां परम पुरातन होते हुए भी आज चिर नवीन लगती है। यही भारतीय संस्कृति का रहस्य है और यही उनका उद्‌घाटन भी।'' अबुलफजल लिखता है– ''भारतीय चित्रकारों के बारे में क्या कहा जाए, उनकी शैली और उनके विचार संसार में सर्वोपरि है।'' संसार के विद्वानों विशेषकर पारचात्य विद्वानों का मत है कि हिन्दू धर्म, संस्कृति, साहित्य और हिन्दू दर्शन संसार में अपना अनूठा स्थान रखते है।

भारत की संस्कृति ने सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है क्योंकि इसकी दृष्टि अत्यन्त व्यापक है। ईसा संस्कृति केवल ईसा के चारों और घूमती है, इस्लामी संस्कृति मुहम्मद साहब के और आधुनिक साम्यवादी काल मार्क्स के चारों और घूमती है परन्तु भारत के साथ ऐसा नहीं है। इस संस्कृति को किसी एक व्यक्ति अथवा एक जाति ने निर्मित नहीं किया। न जाने कितने अवतारों, कितने ऋषि मुनियों, कितने वैज्ञानिकों, कितने सन्तों और भक्तों आदि ने इसका निर्माण ही नहीं किया इसका विकास भी किया है। यह संस्कृति सामासिक है और इस संस्कृति में कितना सम्मिश्रण हुआ है। इसका विकास भिन्न–भिन्न विद्वानों, भिन्न–भिन्न जातियों, भिन्न–भिन्न भाषा–भाषियों, भिन्न–भिन्न रंगों, रूपों, वेशभूषा वालों और खान–पान वालों ने किया है। पहाड़ों, जंगलों, नदियों मरूस्थलों के कारण एक दूसरे से अलग रहने पर भी सांस्कृतिक दृष्टि से यहां के सब लोग एक हैं। उत्तर के केदारनाथ और बद्रीनाथ के मन्दिरों में दक्षिण के पुजारियों की प्रतिष्ठा, हर्षवर्धन के समय से सूर्य, शिव और बुद्ध की संयुक्त पूजा, तुलसीदास द्वारा शैवों और वैष्णवों की मैत्री का प्रयत्न, अकबर का दीन–ए–इलाही और गुरूनानक के उपदेश और इसी प्रकार के न जाने कितने प्रत्यन इस बात को सिद्ध करते हैं कि इस देश के विचारकों का केवल एक ही आदर्श रहा है कि इस देश में हर दृष्टि से एकता को स्थापित रखा जाये। भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा गुण–विविधता में एकता है। राधा कुमुद मुकर्जी ने लिखा है, ''भारतवर्ष सम्प्रदायों और रीति–रिवाजों, धर्मो और सभ्यताओं, विश्वासों और बोलियों, जातीय प्रकारों और सामाजिक व्यवस्थाओं का एक अजायबघर है।''

अन्य देशों की संस्कृतियां तो समय की धारा के साथ–साथ नष्ट होती रही किन्तु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर–अमर बनी हुई है। प्राचीनकाल से भारतीय संस्कृति का सुदूर देशों के साहित्य दर्शन, धर्म, विज्ञान, ज्योतिश कला, संगीत तथा चिकित्सा पर स्वस्थ्य प्रभाव होना प्रमाणित होता है जो इस संस्कृत के समग्र तथा

सशक्त होने का द्योतक है न कि केवल प्राचीन काल में अपितु आधुनिक युग में विश्व के विभिन्न देशों के प्राचीन भारतीय साहित्य दर्शन योग तथा अध्यात्म का मनोयोग पूर्वक अनुशीलन कर उससे प्रेरणा ग्रहण कर रहे है जिससे हमें भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता एवं महत्वपूर्णता से परिचित होने का अवसर प्राप्त होता है इसलिए भारतीय संस्कृति का वैश्विक स्तर पर जानने को मिलता है। कान्ट जार्न्स के अनुसार आर्यावर्त मात्र हिन्दु धर्म का ही घर नहीं है, वरन् यह सभ्यता और संस्कृति आदि का भण्डार है। डेलमार ने कहा– ''पश्चिमी संसार को जिन बातों पर गर्व है, वे असल में भारत से ही वहां गयी है।'' इसी प्रकार के विचार मैक्समूलर, टेलर, वैलेन्टाइन, बेवर, कोलब्रक आदि ने भी प्रकट किया। आज हमारे विभिन्न पकवान तथा खान–पान की चीजें, भारत में पहने जाने वाले कपड़ों की मांग, भारतीय भाषा हिन्दी तथा अन्य भाषा का प्रसार व प्रचार और उनके साथ–साथ अच्छे शिष्टाचार, तहजीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएं और मूल्य आज भी वैश्विक स्तर पर विद्यमान हैं जो हर व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखाती है। यही वजह है कि यह सार्वभौमिक है और सनातन है। महाभारत के अन्तर्गत दिया गया श्रीकृष्ण भगवान द्वारा ''गीता का कर्मयोग'' मानव जाति के लिए महान संदेश है। कोटिल्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र' भारत देश के साथ ही सम्पूर्ण विश्व को शासन व्यवस्था का अभूतपूर्व ज्ञान दिया। इसके बाद लौकिक संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि रामायण, महाभारत, अटठारह पुराणों की रचना हुई। आचार्य भरत ने नाट्य विद्या के स्वतंत्र लक्षण–ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' की रचना की जिससे भारत देश सहित विश्व को भी 'नाट्य विद्या' की जानकारी प्राप्त हुई। काव्य के ध्वनि रस अलंकार और सम्प्रदायों की स्थापना संस्कृत साहित्य की भारत सहित विश्व साहित्य को अनुपम देन है। चरक द्वारा आयुर्वेद की खोज, प्राचीनतम भाषा संस्कृत योग, अध्यात्म आदि आज भी वर्तमान में अपना अस्तित्व बनाए हुए है। इसलिए भारत की सांस्कृतिक विरासत विश्व पर अपना एकाधिकार बनाए हुए है। इसमें निहित नैतिक मूल्यों की प्रधानता, वसुधैवकुटुम्बकम् की विश्व स्तर पर आज जरूरत है। भारत का वैष्णव धर्म सबसे ज्यादा विदेशों में फैला। इसका प्रमाण हम मथुरा, वृन्दावन और राधाकुद्र पर देख सकते है। यहां पर सबसे ज्यादा पर्यटक पुरूष धोती कुर्ता और सिर पर वैष्णव चोटी और महिलाएं भारतीय नारी परिधान साड़ी में आते है।

इस प्रकार हमारी संस्कृति अपने समन्वयकारी स्वरूप के कारण सदा अजय रही और रहेगी। भारतीय संस्कृति अमर है और इसलिए कि समय ने भी उसे नहीं झकझोरा। हमारी संस्कृति बड़ी समन्वयकारिणी है अतः इसने वट–वृक्ष की तरह आंधी झंझावत सब को झेला। सब चले गए यह अभी भी अविचल खडी है। इस विशाल वट वृक्ष की जड़ें इतनी गहरी आध्यात्मिकता एवं दृढ़ सिद्धान्तों पर है कि इसे गिरने का भय नहीं। यह एक ऐसी संस्कृति निकली जिसका पेट और पाचन क्रिया इतनी बड़ी उत्तम रही कि जो–जो संस्कृतियां आयी इसमें विलीन हो गई यह ज्यों–की–त्यों बनी रही।

सन्दर्भ

1. पाण्डेय, रामशक्ल., शर्मा, ज्योति. (2005). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. अग्रवाल पब्लिकेशन।
2. (2005). भारतीय आधुनिक शिक्षा जनवरी।
3. मदान, पूनम. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. अग्रवाल पब्लिकेशन।

4. शर्मा, डा0 आर0आर0. शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार. आर0 लाल बुक डिपोः मेरठ।
5. पचौरी, डा0 गिरीश. शिक्षा के सामाजिक आधार. आर0 लाल बुक डिपोः मेरठ।
6. (2010). 'गुरूकुल' *The Education Journal of KITE Group*. Vol.No. 3 December.
7. सक्सैना, एन0आर0 स्वरूप., कुमार, संजय., पाण्डेय, डा0 के0पी0. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त. आर0 लाल बुक डिपो।
8. dristitiias.com.
9. https:/mbackbook.com.posts.